Name:- Soni Kumari
class:- B.A III year
Deptt:- Sanskrit

समास

रूपसिद्धि

अर्धपिप्पली

लौ० वि० — अर्धं पिप्पल्याः
अलौ० वि० — अर्ध अम् पिप्पली ङस्

ऐसा विग्रह होने पर 'अर्धं नपुंसकम्' से अर्धम्' शब्द का 'पिप्पल्याः' के ~~स~~ साथ समास ~~होने~~ होता है। तत्पश्चात 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप ('अम् और ङस्) का लोप होने पर रूप बना —

अर्ध पिप्पली

इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से अर्ध' की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग हो रूप बना —

अर्धपिप्पली

इस स्थिति में पुनः प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'स्वौजसमौट्' से 'सु' विभक्ति आने पर रूप बना —

अर्धपिप्पली सु

इस स्थिति में 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' से सु' का लोप होकर रूप ~~बना~~ सिद्ध होता है —

अर्धपिप्पली